

प्राचीन भारत के इतिहास में विदेशी आक्रमणों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन आक्रमणों ने न केवल राजनीतिक परिस्थितियों को प्रभावित किया, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव डाला।

1. आर्यों का आगमन (लगभग 1500 ई.पू.)

यद्यपि इतिहासकारों में मतभेद है, परंतु अधिकांश विद्वान मानते हैं कि आर्य मध्य एशिया या ईरान के क्षेत्र से भारत आए।

उन्होंने उत्तर-पश्चिम से प्रवेश किया और धीरे-धीरे गंगा घाटी तक फैल गए।

आर्यों के आगमन ने वैदिक सभ्यता की नींव रखी और भारतीय समाज की भाषा, धर्म और संस्कृति पर स्थायी प्रभाव डाला।

2. फारसी (पारसी) आक्रमण (6वीं शताब्दी ई.पू.)

ईरान के आकेमेनिड (Achaemenid) साम्राज्य के राजा डेरियस प्रथम (Darius I) ने लगभग 518 ई.पू. में सिंधु क्षेत्र (गंधार, तक्षशिला, सिंध) पर अधिकार किया।

यह क्षेत्र उसके साम्राज्य का बीसवां प्रांत (Satrapy) बना।

फारसियों ने भारत में प्रशासनिक व्यवस्था, कर प्रणाली और सिक्कों के प्रचलन पर प्रभाव डाला।

3. यूनानी (ग्रीक) आक्रमण — सिकंदर महान (326 ई.पू.)

सिकंदर (Alexander the Great) ने 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण किया।

उसने पंजाब के राजा पोरस (Purushottama) को हाइड्रेस्पिस (झेलम) नदी के युद्ध में हराया, लेकिन उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे पुनः शासन सौंप दिया।

सिकंदर का भारत पर नियंत्रण अल्पकालिक रहा, किंतु उसके आक्रमण ने भारत-यूनान के सांस्कृतिक संपर्कों को जन्म दिया।

बाद में यूनानी सेनानायकों ने भारत के उत्तर-पश्चिम में छोटे राज्य स्थापित किए जिन्हें इंडो-ग्रीक राज्य कहा गया।

4. शक, पार्थियन और कुषाण आक्रमण (2वीं शताब्दी ई.पू. से 1वीं शताब्दी ई.)

यूनानियों के बाद मध्य एशिया से शक (Scythians) आए जिन्होंने पश्चिमोत्तर भारत में शासन किया।

उनके बाद पार्थियन (Parthians) आए, जिन्होंने कुछ समय तक सिंध और पंजाब में शासन किया।

अंततः कुषाण (Yuezhi) जाति ने उत्तर भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

इनके प्रमुख राजा कनिष्क ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया, जिससे भारत और मध्य एशिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा।

5. प्रभाव और परिणाम

इन आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारत और पश्चिम एशिया, यूनान तथा मध्य एशिया के बीच सांस्कृतिक, व्यापारिक और धार्मिक संपर्क स्थापित हुए।

कला के क्षेत्र में गंधार शैली (Gandhara Art) इसी मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

विदेशी आक्रमणों ने भारतीय समाज की विविधता, सहिष्णुता और सांस्कृतिक समरसता को और समृद्ध किया।

निष्कर्ष:

प्राचीन भारत पर हुए प्रारंभिक विदेशी आक्रमण केवल युद्ध या विजय के प्रयास नहीं थे, बल्कि वे संस्कृतियों के मिलन के अवसर भी बने। इन आक्रमणों ने भारत की सभ्यता को बाहरी प्रभावों से समृद्ध किया और उसे एक विश्व-सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित किया।